झूठ के पांव

सामाजिक आपात्काल की परिस्थितियों के आकलन के दस लक्षण माने जाते हैं। इनमें से भी दो का वहुत व्यापक प्रभाव होता है। 1. प्रचार माध्यमों को आधार बनाकर सत्य को झूठ झूठ़ को सच बनाने मे सफलता तथा 2.सामाजिक विष्वास प्राप्त व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा समाज सेवा या राजनीति का व्यवसायीकरण । यदि वर्तमान सामाजिक स्थिति का आकलन करें तो दोनो ही दिषाओं में समाज लगातार कमजोर हो रहा है। पुराने जमाने में एक कहावत थी कि झूठ के पाव नहीं होते। किन्तु आज तो हम देख रहें कि झूठ प्रसार माध्यमों के सहारे तेजी से दौड रही है।

भारत लगातार साम्प्रदायिक आधार पर दो गुटों में बंट रहा है। एक में हैं वामपंथी ्गांधीवादी ्मानवाधिकार वादी ्मुसलमान तथा दूसरे में हैं संघ परिवार, राश्टवादी भारतीय संस्कृति के अग्रणी पैरोकार आदि। दोनो दो गुटों में बटे हुए हैं किन्तु असत्य को सत्य बनाने और सत्य को असत्य बनाने में दोनो बढ चढ कर आगे निकलने की जी तोड कोषिष में लगें हैं। मैने पिछले पांच सात वर्शों की कुछ गंभीर घटनाओं का आकलन किया तो पाया कि इन घटनाओं में कई राश्टीय स्तर के ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों ने सहभागिता की है। कई स्थापित समाज सेवक जिनके जीवन के अन्य अनेक कार्य श्रध्दा भाव पैदा करते हैं ् भी गुट बन्दी के कारण किसी किसी मामले में सच को झूठ बनाते बनाते इस सीमा तक नंगे हो जाते है कि हम लोगो को ही षर्म से आंखें बन्द कर लेनी पडती है। कुछ वर्श पूर्व घटा गोधरा रेल अग्नि कांड एक ऐसा ही मामला था। सारा विष्व समझ चुका है कि कुछ साम्प्रदायिक मुसलमानों नें रेल डब्बे पर आक्रमण किया जिसकी आग से कार सेवक जल मरे। मुझे खूब याद है कि उस समय कई प्रकार के असत्यों को स्थापित करने की कोषिष हुई। स्टेषन पर सामान बेच रहे वेंडरो को नास्ता करके पैसा न देने के नाम पर झगडा हुआ ् स्टेषन पर से एक लडकी को जबरदस्ती खींच कर चढाने पर झगडा हुआ और ऐसी अन्य कई कहानियां तैयार की गई ओर तब अन्त में यह असत्य स्थापित हो पाया कि आग से बाहर के लोगों का कोई सम्बन्ध नहीं था। आग या तो कार सेवकों ने ही लगाई या उनकी गल्ती से आग लग गई। प्रसिद्ध गांधीवादी और गांधीमार्ग के सम्पादक अरूण बोरा जी ने अपनी पत्रिका में कुछ सच खोजने की कोषिष की तो आमतौर पर गांधीवादियों ने उनके लिये जैसे षब्दों से विरोध प्रगट किया वह मैने स्वयं अबोहर पंजाब में सुना हैं। मेरे एक निकट के गांधीवादी मित्र ने भी यह बात मुझे कई बार बताई कि आग बाहर से लगना संभव ही नहीं है। वामंपथियों द्वारा किये जाने वाले ऐसे प्रयत्न तो जग जाहिर हैं किन्तु सत्य और अहिंसा की दिन रात माला जपने वाले भी सत्य की ठीक से खोज किये बिना ही अपने गुट द्वारा फैलाये गये असत्य को फैलाना षुरू कर दे तो कश्ट होना स्वाभाविक है। मैं मानता हूं कि गांधीवादियों ने जानबूझकर ऐसा नहीं किया किन्तु इन्होने ऐसा करके सत्य को क्षति तो पहुंचाई ही।

कुछ माह बाद ही दूसरी गंभीर घटना हुई जब कुछ आतंकवादी मुसलमानों ने संसद भवन पर आक्रमण किया। आक्रमण बिल्कुल प्रत्यक्ष होने से घटना को असत्य कहना तो संभव नहीं हो सका किन्तु पुलिस द्वारा पकडे गये लोग निर्दोश हैं या उनके साथ मानवीय व्यवहार जैसे तर्क तो हवा में तैरते ही रहे। न्यायालय से निर्दोश सिद्ध गीलानी का तो ऐसे सम्मान हुआ जैसे कि सम्मान कर्ता पहले से ही जानते हों कि एक निर्दोश व्यक्ति बडी मुष्किल से आतंकवादियों के चंगुल से बच सका हैं। आष्चर्य तो तब हुआ जब एक विष्व प्रसिद्ध स्थापित मानवाधिकार कार्यकर्ता अरून्धती राय ने संसद पर हुए हमलों के शडयंत्र का संदेह भारतीय षासन की ओर मोड दिया। अरून्धती जी के कष्मीर पाक को सौंप देने अथवा परमाणु विस्फोट से बौंखलाकर भारत की नागरिकता छोडने की घोशणा जैसे विचारों को उनके स्वतंत्र विचार माने जाने चाहिये किन्तु संसद के हमले पर प्रष्न खडे करना उनके विचार न होकर किसी घटना का असत्य विवरण मात्र ही है। ऐसी स्थिति में उनका कथन उनके विचार न होकर उनकी नीयत की ओर इषारा करने लगते हैं। अरून्धती राय कोई सामान्य महिला तो हैं नहीं। सूचना का अधिकार विशय पर उन्होने सघर्श की जो पहल की उसके लिये उन्हें बहुत बहुत धन्यवाद। किन्तु इस एक गल्ती ने उनके प्रति भी मेरा मन खट्टा कर ही दिया।

इसी वर्श दो हजार आठ में बाटला हाउस में दो आतंकवादी मारे गये और एक इन्सपेक्टर मोहनचन्द षर्मा भी षहीद हो गये। चौबीस घंटे के भीतर ही मुसलमानों के हिमायती गुट ने तर्क खोजने षुरू किये। अमर सिंह जी तथा अर्जुन सिंह जी के षब्द तो ऐसे मामलों में कोई महत्व नहीं रखते क्योंकि ये तो किस सीमा तक जा सकते हैं वह सीमा आज तक बनी ही नही। पी.एच.यू.आर की टीम संजरपुर की ओर दौड पडी। अनेक मुस्लिम सांसदों का प्रतिनिधि मंडल प्रधान मंत्री से मिला। और भी चारों ओर दौड धूप हुई। किन्तु आष्चर्य तो तब हुआ जब जामिया मिलिया के कुलपति मुषीरूल हसन जी का इस्लाम प्रेम भी एकाएक जागृत हो उठा और उन्होने गिरफतार आंतकियों की विद्यालय की ओर से

कानूनी सहायता की घोशणा कर दी। मुषीरुल हसनजी इस धटना से भी अधिक गभीर धटनाओं से भी कभी विचलित नहीं हुए थे। यह धटना तो पूरी तरह संदेह से परे थी।पर पता नहीं किन तर्को के आधार पर उन्हे समझाया गया। मैं अब भी समझता हूं किउन्होने जान बूझकर ऐसा नहीं किया होगा। किन्तुउनके कथन ने एक गंभीर वातावरण तो पैदा कर ही दिया था। जिसके कारण सरकार कई दिनो तक परेषान भी रही और पेषेवर गुटों को सम्बल भी मिल गया।

लगभग इसी काल खंड मे उडीसा के कंधमाल मं लक्ष्यणानन्द जी की हत्या हो गई। संध परिवार तो ऐसी धटनाओं का लाभ उठाने के लिये पूरी तरह तैयार बैठा ही रहता है। धडाधड इसाइयो के धर भी जलने लगे और गिरजाधर भी। उडीसा की आग की लपट कर्नाटक तक चली गई। संध परिवार के विरूद्ध भारत के बाहर से भी विरोघ के स्वर उठे। मेरे जैसे निश्पक्ष व्यक्ति को भी विष्वास हो गया कि लक्ष्मणानन्द हत्या मे इसाइयो की संलिप्तता का प्रचार संध वालों की करतूत है। नक्सलियो ने स्वयं भी हत्या करना स्वीकार कर लिया था। किन्तु मुझे आष्चर्य हुआ जब इतने

महिने बाद स्पश्ट हुआ कि लक्ष्मणानन्द जी की हत्या मे मुख्य योजनाकार इसाई नेता तथा कांग्रेस सांसद रमाकान्त नायक है। मैं अभी निष्चित रूप से तो नही कह सकता कि यह अन्तिम विष्वसनीय सत्य है। किन्तु अब इतने माह बाद पुलिस ने जो कुछ कहा है उसे एकाएक तो नकारा नही जा सकता। जिन संस्थाओ ने इसाइयों के पक्ष मे आसमान सर पर उठा रखा था उनका तो मुंह ही बन्द हो जायेगा।

कुछ दिनों बाद प्रज्ञा ठाकुर और पुरोहित जी का मामला आया। स्पश्ट दिखता है कि आंतकवादी धटना है। इनलोगों ने मिलकर बेगुनाहों की हत्याऍ भी की और प्रयत्न भी किये। अब तक तो इसमे कही कोई संदेह की गुंजाइष नही दिखती किन्तु इस आंतकवादी प्रयत्न में भी हमारे हिन्दु धर्म के कुछ ठेकेदारो को पडयंत्र दिखने लगा। जो लोग इस धटना के उजागर होने के पूर्व तक पूरी ताकत से आंतकवाद का विरोध कर रहे थे उन सबकी भाशा मे हिन्दु आंतकवाद और मुस्लिम आंतकवाद जैसे दो षब्दो का अलग अगल प्रयोग होने लगा। अडवानी जी और राजनाथसिंह जी की तो राजनैतिक मजबूरी समझ मे आती है। संध परिवार भी इस मामले मे झूठ को सच सच को झूठ बनाने की तिकडम करेगा ही । किन्तु अन्य कुछ विष्वसनीय साधु सन्तो ने, भले ही उनकी संख्या बहुत कम ही क्यो न हो किन्तु उन्होने अपनी प्रतिश्ठा तो दांव पर लगाई ही। ऐसे मामलो मे और सफाई होते तक यदि आप चुप भी नही रह सके तो आप को हिन्दू सन्यासी माना जाय या गेरूआ वस्त्र धारी राजनैतिक पेषेवर । मुझे आष्चर्य हुआ कि रातोरात बहुत से लोगो ने अपनी भाशा ही बदल ली। प्रज्ञा पुरोहित ने किसी आंतकवादी की हत्या नही की है न ही किसी धटना की प्रतिकिया मे कुछ किया है। सोच समझ कर और योजना बनाकर बेगुनाहों की हत्याओं का समर्थन करने वालों को हिन्दू कहने मे ही षर्म आती है।

सितम्बर माह मे सर्वोदय सम्मेलन मे बहन कुसुमलता केडिया का एक पत्र पढने को मिला। पत्र मे सर्वोदय के विरूध लिखते लिखते केडिया बहन ने यह भी लिख दिया कि उनकी जानकारी के अनुसार गांधी जी के षरीर से निकाली गई गोलियॉ नाथूराम गोडसे की पिस्तौल से निकली गोलियॉ नही थी। मै नही समझ सका कि गांधी हत्या मे गोडसे की भूमिका को विवादास्पद बनाने का प्रयास क्यो किया गया। मैं केडिया बहन को जानता भी हूँ और मानता भी हूॅ। पंद्रह वर्श पूर्व जब वे गांधी जी की प्रषंसक थी वह रू'प भी मैने देखा है। उन्होने रामानुजगंज के संधर्श मे वहॉ के नागरिको की भरपूर मदद की थी । आज उनके संबंध सर्वोदय से कटु हो गये हैं तो क्या उन्हे इतना नीचे उतरना चाहिये कि गांधी हत्या पर ही प्रष्न खडा करना आवष्यक हो। यदि वे कोई ऐतिहासिक सत्य पर लिखते समय यह लिखती तब भी कुछ बात होती किन्तु सहज, संध परिवार की चापलूसी के उदेष्य से, इस तरह लिखना उनके समान विद्वान को षोभा नही देता ।

अभी नवंबर माह मे ही बम्बई आकमण मे ए टी एस प्रमुख हेमन्त करकरे की हत्या हो गई। एक केन्द्रीय मंत्री अब्दुल रहमान जी अंतुले ने ऐसी स्पश्ट धटना को भी विवादास्पद बनाने की भरपूर कोषिष की। करकरे जी की हत्या मे आंतकवादियों के अतिरिक्त भी कुछ होना संभव है ऐसा उन्होने संदेंह व्यक्त करके अपना अल्पसंख्यक धर्म निभाया किन्तु समाज मे एक मुसीबत खडी हो गई। उर्दू प्रेस उनके बयान के आधार पर सामने आने लगे।
दिग्विजय जी भी मुखर हुए और अन्त मे सरकार को अपना स्पश्टीकरण देना पडा।

उपर मैनें जिन धटनाओ का जिक्र किया है उनमे कंधमाल की धटना को छोडकर सभी ऐसी है कि इन धटनाओ को दूसरी दिषा मे मोडने वाले भी सत्य अच्छी तरह जानते है फिर भी उन्हे विष्वास है कि यदि पूरी ताकत से प्रचार किया जाय तो भारत मे असत्य को सत्य और सत्य को असत्य सिध्द करना कोई कठिन काम नही । दो विपरीत साम्प्रदायिक संगठन तो पूरी तरह आपके पक्ष या विरोध के लिये तैयार बैठे है। उन्हे न सत्य से मतलब है न न्याय से । उन्हे तो सिर्फ अपने पक्ष से मतलब है।दूसरी और सत्य को असत्य असत्य को सत्य सिद्ध करने मे सहायता करने के लिये आपको बडी मात्रा मे ऐसे पेषेवर लोग भी मिल जायंगे जो आपसे कुछ धन लेकर आपकी बात को पूरी तरह प्रमाणित करने के लिये तैयार है । और कोइै ऐसी इकाई नही है जो या तो समाज मे विष्वसनीय हो या ऐसे मामलो मे सत्य के स्थापित करने के लिये मैदान मे कूद पडे। सत्य असत्य के बीच निर्णय करने मे बहुत बडी बाधा हो गई है। लोग समझ ही नही पा रहे कि किस पर विष्वास करें।

इसलिये मै यह कह सकता हूँ कि आज समाज व्यवस्था संकट काल से गुजर रही है। समाज मे असत्य सत्य के समान मान्यता प्राप्त करता जा रहा है। स्थापित विद्वान गुटों मे षामिल हो गये है। वातावरण निराषा पूर्ण है । आवष्यकता ऐसी है कि कोई स्वामी दयानन्द कोइ गाधी तैयार किया जाय जिसके अनुयायियो के सत्य पर समाज विष्वास हो । यदि हम ऐसा कर सके तो समाज को वर्तमान संकट से निकाल सकते है।

हिन्दू ही हिन्दुत्व का संकट

डा. ईष्वर दयाल, राजगीर, नालंदा

कितना भी विरोधामासी प्रतीत हो किन्तु हिन्दू ही हिन्दुत्व का संकट है। यही कारण है कि बडा से बडा हिन्दुत्ववादी भी हिन्दू को परिभाशित करने से कतराता है

भाशा विज्ञान की दृश्टि से हिन्दू अभारतीय –विदेषीराज–फारसी षब्द है। इसी कारण भारतीय धर्म ग्रन्थों और पुराने संस्कृत कोषो मे दूर दूर तक इसका कही अता पता नही है। पुराने फारसी कोषो मे हिन्दु षब्द का अर्थ काला, चोर आदि मिलते है

ऐतिहासिक दृश्टि से देखे तो तीसरी षताब्दी ई. पू. से भी पहले से इरानियों यूनानियो ने भारतवासियो को हिन्दु कहना षुरू कर दिया था। मूलतः हिन्दू षब्द साम्प्रदायिक नही भौगौलिक इकाई का धोतक था। सिन्धु

KAASHINDIA

नदी के प्रवाह की बाई ओर निवास करने वाले सभी लोगो को चाहे वे बौद्ध हो जैन हो मुसलमान हो या ईसाई वे हिन्दू ही कहते थे किन्तु एक सहसम्रब्दी से भी अधिक काल तक भारत वासियो ने स्वय के लिये हिन्दू षब्द स्वीकार नही किया। ऐतिहासिक सत्य यह भी है कि तत्कालीन भारतीय समाज इतना उदार उदान्त प्रवहनषील, सर्वसंग्रही, स्वातंत्र चेता, सर्व समावेषी था कि न केवल भारत मे झोंके के झोंके आने वाले विभिन्न मानव समूह हुण ,षक, कुषान, सिथियन, युवी आदि इस महामानव समुद्र मे समाहित होकर इस तरह एकरस , एकाकार होते चले गये कि उनका पता पाना मुष्किल हो गया बल्कि भारतीय संस्कृति अफगानिस्तान,चीन, जापान, दक्षिण पूर्व एषिया,अरब, यूनान से लेकर धुर अमेरिका तक फैलती चली गई। (दप्टण्य– हिन्दू अमेरिका मिक्षु चमन लाल) इस महा अभियान के लिये भारतीयो ने न तो इस्लामी षस्त्र बल का सहारा लिया न इसाई धन बल का । किसी तरह के कुचक्र पडयंत्र या सत्ता का बल भी इसके लिय नही था। इस प्रसरण के पीछे बस एक ही बल कार्य कर रहा था। इस प्रसरण के पिछे बस एक ही बल कार्य कर रहा था। षौम्य बल उदारता सहिश्णुता, सर्व संग्रह और सर्व समावेषिकता।

भारतीयो ने प्रायः दषमी षताब्दी ई. के आस पास वैदेषी आक्रन्ताऔ की देखा देखी और अनुसरण मे न केवल स्वंय को हिन्दू कहना प्रारम्भ कर दिया बल्कि उन्ही की तरह षस्त्र बल पर भरोसा भी करने लगे और अन्य संकिर्णताओ मे भी उलझ गये। स्वयं हिन्दू जिसमे मूलत मुसलमान ईषाई सब समाहित थे का अर्थातरण हो गया। मुसलमानो को हिन्दू से अलग माना गया। अर्थात हिन्दू का अर्थ संकोच हुआ संकिर्णता आईं और एक बार जो संकिर्णता का सिलसिला षुरू हुआ तो बौद्धो जैनो को तो छोडीये गोसाइयो योगियो दरिया दासियो को भी अहिन्दू धोशित करने की संकिर्णता प्रदर्षित की गई। इस संकिर्णता के अनूपात मे ही भारतीयो के राजनैतिक और सांस्कृतिक क्षितिज का संकोचन होता चला गया। भारत ने एक हजार वर्श की गुलामी भोगी , सारे संसार के भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र या तो भूमिसात हो गये या स्मारक मात्र बनकर रह गयें आज तो स्थिति यह है कि भारत मे भी हिन्दू अल्पसंख्यक होने का खतरा झेल रहा है जिसने गम्भीर मनीशी चिन्तको को भी विचलित कर दिया है। समस्या के समाधान की दिषा मे चिन्तन मनन और सक्रियता देखी जा रही है

दिक्कत यह है कि सम्प्रति हिन्दुत्व की रक्षा की चिन्ता मे दुबले हुऐ जाते अधिकांष संगठनो और व्यक्तियो के आदर्ष या तो हिटलर मुसोलिनी है या तालिबान, ओसामाबिन लादेन। उनके उग्रवाद और आंतक के रास्ते से हिन्त्व बच भी जाये, बढ भी जाये तो वह भारतीय हिन्दुत्व नही होगा वह या तो इसाई हिन्दुत्व होगा या इस्लामी हिन्दुत्व। आक्रमकता ,कठमुल्लापन, हिंसा , दुराग्रह, कभी भारतीय हिन्दुत्व के स्वभाव मे नही रहे है यधपि अन्दर के भी और बाहर के भी निहित स्वार्थ इसे सदैव उस ओर ढकेलने मे लगे रहे है पर इक्के दुक्के अपवादो को छोडकर आम भारतीय मानस षौम्य षक्ति पर ही आश्रित रहा है। उसी ने उसकी रक्षा भी की और विस्तार भी दिया। जब डा. इकबाल "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी" लिख रहे थे तब उनका संकेत इसी षौम्य षक्ति की ओर था। स्व. जयप्रकाष नारायण के पूछने पर बाबा ने भी यही उत्तर दिया था। भारतीयता या हिन्दुत्व की रक्षा और विस्तार के लिए उसी षौम्य षक्ति को जाग्रव और सक्रिय करने की आवष्यकता है।

वैसे मेरे इन विचारो से असहमत लोगो की संख्या भी कम नही है । गोयबल्स मार्का प्रचार तंत्र से प्रभावित हिंसा के समर्थक यहॉ तक कह जाते है कि गांधी की अहिंसा इसलिये सफल हो गई क्यो कि प्रतिपक्ष मे सम्य इसाई थे। अगर गांधी का सामना कट्टर और रक्त पिपासु इस्लाम से हो तो गांधी को धुटने टेकने पडते। ऐसे लोगो को जानना चाहिए कि इसाईयत का चेहरा किसी भी अर्थ मे इस्लाम से कम कटटर और रक्त रंजित नही रहा है। लोग कहते है कि तलवार से फैला इस्लाम यह नही कहते है कि तोप से क्या फैला है?इसी सच्चाई को उजागर करता है। अपने प्रसार के लिए इसाईयत ने जितना रक्त पान पांचो महादेषों मे कि या है वह किसी भी अर्थ मे इस्लामिक रक्तपान से कम नही है। इन तथा कथित सम्य अंग्रेजो ने जितने निर्दोश स्त्री पुरूशो की हत्या 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान की वह दोनो विष्व युद्धो मे मारे गये लोगो की सम्पूर्ण संख्या से भी अधिक थी।

जिस बर्बर और आक्रामक इस्लाम से भारत का सामना हुआ उनके पूर्वज षक, कुपाण,हुण उनसे कुछ अधिक ही खूखार रक्तपिपासु थे। हत्या, लूट,आगजनी उनके स्वभाव मे थे। परन्तु भारतीय षौम्य षक्ति के प्रभाव मे पीढी दर पीढी उनका रूपान्तरण बौद्ध षैव ,वैश्णव मे होता चला गया और अन्ततः भारतीय समाज मे इस तरह रच बस गये कि प्रयत्न पूर्वक खोजने पर भी उनका अता पता नही मिलता।

हिन्दू बनते ही भारतीयो ने न केवल अपनी सर्व समावेषिकता छोड दी, प्रवेष के दरवाजो को मजबूती से बन्द कर लिया, बल्कि अपने लोगो को ढकेल ढकेल कर मुसलमान इसाई बनने को विवष किया। राणा जसवन्त सिह ने अपने दो पुत्रो को मात्र इसलिये त्याग दिया कि वे उन्ही के आदेष पर अफगान कबीलो के विद्रोह का दमन करने अठक पार चले गये थे। निदान दोनो पुत्र मुसलमान बनने को विवष हुए। (द्रप्टण्य– संस्क्ति के चार अध्याय–दिनकर) बलात इस्लाम अपनाने को विवष किये गये कष्मीरी कबीलो के पुनर्वासियो के प्रयत्न को ध्वस्त कर एकतरफा रोक की दुर्बलता का तमाचा इस्लाम और इसाईयत के गाल पर पडनें से पूर्व स्वय अपने ही गाल पर पडा है। वह अपने कृश्वन्तो विष्वमार्यं के आदर्ष से पतित हुआ है। विष्व के किसी भी व्यक्ति को मार्ग सहारा देने की उदार स्वतंत्रता को हसरत भरी निगाहो से देखने वाले इस्लामी कट्टरता और संकीर्णता के धेरे मे कसमसाने की संभावना पर विराम लगा दिया है। जायें तो जाये कहॉ

KASHINDIA

की मन स्थिति वाले षिक्षित मुस्लिम युवको मे कुठा आक्रोष भरकर उन्हे काला पहाड बनने को विवष करने का दण्ड हिन्दुत्व को भोगना पड रहा है।

डा. इकबाल की इस चेतावनी के साथ सभी हिन्दू नेताओ और धर्माध्यक्षो को अपनी स्थिति और नीतियो पर पुनर्विचार के लिए आंमत्रित करता हूँ।

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानो मे।।

पत्रोत्तर

1. श्री एम. एस. सिंगला, अजमेर राजस्थान

सन्दर्भः ज्ञान तत्व अंक 165 मे प्रकाषित मेरे विचार

सन्दर्भित ज्ञान तत्व का अंक पढकर मुझे पर्याप्त कश्ट हुआ। मेरे विचारो को सही परिप्रेक्ष्य मे न लेकर उसे नाना अनचाहे रंग दिये गये है। विषेश रूप से अहिंसा षब्द को लेकर। मुझे उसे व्याख्यायित करके उसके लिये धटनाओं का सन्दर्भ लेकर या जैसा भी अभीश्ट हो , स्पश्ट करना आवष्यक लगा है। किसी भाशा को पढनेवाला उसका कोई अन्यथा अर्थ लेता है तो उसका दायित्व लेखक का माना जाता है । अस्तु।

मुझे अहिंसा सें एलर्जी आज तक भारत सरकार की नीति के सन्दर्भ मे पैदा हुई है। भारत सरकार अहिंसा का अषोक चक्र दिखाकर, सत्यमेव जयते का आदर्ष मार्ग निर्देषित कर और गांधीजी का नाम लेकर हमेषा कार्यक्षेत्र मे उससे बहुत दूर देखने मे आई है। दूसरे, अपराधियो को पर्याप्त दण्ड न देना विषेश रूप से मृत्युदंड जिसमे अहिंसा और अमानवीयता के भावो का सहारा लेकर गलत नीतियॉ अपनाती है, ऐसा कहा समझा जा सकता है। इसी का परिणाम है कि आए दिन अपराधो मे बेतहाषा वृद्धि हो रही है। अपराधी तत्व अपने को स्वतंत्र(बल्कि स्वच्छन्द) और निरंकुष मानने लगा है। इसके विपरीत कानून का आदर करने वाला वर्ग मूर्ख व डरपोक माना जाकर दयनीय जीवन जीने को विवष है।

अहिंसा का महत्व तो विदेषी विद्वानो ने भी मुक्त हदय से स्वीकारा और सराहा है। इसमे एक प्रमुख नाम मार्टिन लूथर किंग का भी उल्लेखनीय है। अतः अहिंसा से मात्र एलर्जी होना तो निपट मूर्खता होंगी और अपने को आंतकी कोटि मे खडा करने जैसा होगा।

अहिसा सामजिक विशय है। हिसा षासकीय विशय है वह भी सन्दर्भ के साथ न कि तानाषाही कोटि का। इस विशय मे कुछ कथन है –

क्षमा षोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो........ दिनकर

ओ राही दिल्ली जाना तो कहना अपनी सरकार से चरखा चलता हाथो से षासन चलता तलवार से....... गोपाल सिह नेपाली

क्षमा वीरस्य भूशणं– संस्कृत सूक्त

सन् 1960 मे अखिल भारतीय रेल की पहली हडताल हुई। कर्मचारियो की मांग केवल बोनस भत्ते की थी। स्वाभाविक है कि कर्मचारियो के षासन के साथ वार्ताओ के दौर चले पर सरकार नही डिगी। तब हडताल हुई। षान्तिपूर्ण हडताल को खूनी रंग किसने दिया? दूसरे हडताल के परिणाम स्वरूप फिर बोनस भत्ता क्यो दिया गया? पहले ही क्यो न दिया गया? उस समय मै भी गोली का षिकार होने से केवल और केवल ईष्वर कृपा से बचा था जो आज आपसे बात कर पा रहा हूँ। उस नृषंसता की जाचं भी षासन ने किस प्रकार कुचली उसका वृत्तान्त न यहा देना षक्य है और न ही देना अपेक्षित होगा।

वार्ता करके और षान्ति से भारत सरकार केवल विदेषियो से ही निपटती रही है।इसका कारण तो वही जाने तब भी ऐसा देखने मे आता है कि उसकी लचर नीति, आंख दिखाने मे अक्षमता का भाव , षक्ति प्रयोग की इच्छा षक्ति का अभाव आदि है।

अंक के पृ. 12 पर आपकी धारणा निर्मूल है। यद्यपि आपने उसे षंकित भाव से लिया है। मै पूर्ण रूपेण सनातनी हूँ। पूर्ण आस्तिक हूँ– पौराणिक ग्रन्थों के प्रति आस्थावान। इस दृश्टि से मै पूरी तरह अहिसावादी हू़ॅ। परन्तु जब मै देखता हूँ कि हमारा कोइ भी देवता षस्त्र रहित नही है , यहा तक कि षिक्षा की देवी मां सरस्वती भी निषस्त्र नही है तब उससे षस्त्र की उपयोगिता और आवष्यकता प्रतिपादित होती है। दूसरी और हमारी सरकार अहिसा के नाम पर आम जनता को कुचलती दिखाई पडती है तब उसका फल इस प्रकार विपरीत होता है।

कभी मेरे सम्पादन कार्य को लेकर मेरे एक सिरफिरे साथी ने झगडा करके मुझे दो चप्पल लगा दी। मैने प्रतिकार नही किया । मैने सोचा मेरे साथी तो कुछ करेगे। पर ऐसा कुछ नही हुआ। सिवाय इसके कि धटना की भर्त्सना मात्र। बाद मे मुझे ज्ञान हुआ कि जब तक आप स्वयं कुछ नही करेगे, दूसरे तो मौखिक समर्थन ही देगे। अपनी सरकार की भी कुछ वैसी अवस्था पाई जाती है। मै समझता हूँ , स्पश्टीकरण पर्याप्त है।

आपने मुझसे राय मांगी है। मै इतना ही कहूगा कि आप व्यवस्था परिवर्तन का लक्ष्य लेकर चले थे। वही तक अपने को सीमित रखना श्रेयस्कर और फलदायी होगा। संधवाद, प्रज्ञा प्रकरण जैसी धटनाए वर्तमान मे. और होती रहेगी। उन्हे सहन करना होगा। कहा है एकै साधै सब सधै सब साधे सब जाय। इसी को कवि बच्चन ने यो व्यक्त किया है। राह पकड बस एक चलाचल पा जायेगा मधुषाला।

KAASHINDIA

मेरे एक विज्ञ मित्र है प्रो. ओम षरण उनसे आपका समग्र परिचय कराया जा चुका है। वे आपका प्रकाषन ज्ञान तत्व प्रायः निरंतर पढते है । वे आप की कार्य षैली के मुरीद हो गये है उन्होने चाहा है कि आप को यह षेर प्रेशित करूं–

हवा मे रहेगी मेरे ख्याल की बिजली
ये मुष्ते खाक है पानी रहे ,रहे न रहे
यह षेर सरदार मगत सिह ने अपने किसी पेज मे किसी को किया था। षेर इकबाल का है।

उत्तर– आपने अहिसा के विशय मे लिखा उससे तो मेरी सहमति ही है। मुझे भी अहिसा के संबंध मे सरकारी नीतियो से एलर्जी है। आज समाज मे बढती हिसा का मुख्य कारण तो षासन की अहिसा मे ही छिपा है जिसका ठीक विवरण आपने रेल हडताल या सजा मे विलम्ब से दिया है । किन्तु इस सरकारी गडबडी के समाधान के लिये आपने स्वय सषस्त्र होने की वकालत की है जिसके मै विरूद्ध हूॅ। मै चाहता हूॅ कि षासन को अपनी नीतियॉ बदलकर सुरक्षा और न्याय को सर्वोच्च प्राथमिकता हेतु मजबूर किया जावे। यदि ऐसा न हो तो आप अपराधियो के विरूद्ध संधर्श की वकालत करतेहै और मैं षासन की नीतियों के विरुध संधर्श की। यदि आपने सीधे सीधे दण्ड देना षुरू कर दिया तो षासन को क्या दिक्कत होगी?

आपने देवताओ के सषस्त्र होने की बात की । मेरे विचार मे उन्होने जब हथियार उठाये उस समय लोकतंत्र नही था। जब तानाषाही हो और राज्य व्यवस्था को बदलने का कोई अन्य मार्ग न हो तब हिसा या अहिसा के बीच विकल्प की बात हो सकती है, स्वतंत्रता संधर्श मे भगत सिह या सुभाश बाबू के मार्ग पर चर्चा हो सकती है। किन्तु लोकतंत्र मे ऐसा उचित नही। यदि आप वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था को लोकतंत्र नही मानते तब भी आप वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था के विरूद्ध हथियार उठाने तक ही बात कर सकते है न कि सीधे सामाजिक संधर्श की । आप पर किसी ने वार किया और आपके साथियो ने उसे उपयुक्त दण्ड नही दिया तो आपको अफसोस है कि आपको साथियो पर भरोसा न करके स्वय सीधा बल प्रयोग करना चाहिये था। मेरे विचार से आप गलत है। दूसरो को हिसा के लिये प्रोत्साहित करना कोई अच्छी बात नही है। विषेशकर उसके लिये तो एकदम ही गलत है जिसने जीवन मे न कभी बल प्रयोग किया हो न ही उसका दुश्परिणाम भुगता हो।

आपने मुझे एक ही दिषा मे चलने की सलाह दी है। मै तो सिर्फ विचार मंथन की ही एकमात्र राहपर चल रहा हूॅ।मैने अफजल गुरू का भी विरोध किया है और प्रज्ञा ठाकुर का भी। मुझे आपकी नीति मे साम्प्रदायिकता की गंध आती है, जब आप अफजल गुरू की हिसा के विरूध तो बहुत ज्यादा सकिय रहते है और प्रज्ञा ठाकुर के मामले मे मुझे रोकने लगते है। यह दुहरा आचरण ठीक नही ।

ओम षरण जी के षेर से मेरा उत्साह बढा है। उन्हे भी मेरा धन्यवाद पहुचा दे । यदि उनका पता भेज दे तो उन्हे अलग से पत्रिका भेज सकते है ।

3 .श्री मधु श्री काबरा, सम्पादक समाज प्रवाह, मुलुन्ड, बम्बई 40080

ज्ञान तत्व मिलता रहता है। सभी अंक पठनीय तथा महत्वपूर्ण होते है। किन्तु अंक एक सौ तिरसठ मे संविधान समीक्षा बहुत ज्ञान वर्धक है। बधाई स्वीकार करें।

4. श्री सुरेन्द्र बिश्ट , बम्बई

मैने भारतीय पक्ष पत्रिका मे प्रकाषित आपका संविधान समीक्षा संबंधी लेख पूरा पढा। आपने भारतीय संविधान को बिलकुल ही नंगा करके उसके प्रत्येक अंग को स्पश्ट कर दिया है । भारतीय पक्ष का यह अंक तो संग्रह करने योग्य है। आपको बहुत बहुत बधाई।

उत्तर– मैने यह लेख यह सोच कर लिखा था कि इस लेख के माध्यम से समाज मे एक बहस छिडेगी किन्तु वैसा इसलिये नही हो सका कि संविधान प्रषंसको ने चुप्पी साध ली। वर्श पंचान्नवे मे मै गोरखपुर सेंट एन्डयूज कालेज मे संविधान समीक्षा विशय का मुख्य वक्ता था। करीब डेढ सौ चुने हुए लोग उपस्थित थे जिनमे अनेक वरिश्ठ वकील प्रोफेसर भी थे। मैने अपना यही भाशण वहा दिया तो समाप्त होने के पूर्व ही वहा के बार के अध्यक्ष आवेष मे आकर बीच मे उठ कर बोले कि उक्त तर्को का विरोध करना तो संभव नही किन्तु चूॅकि संविधान के विरूद्ध तर्क पूर्ण बाते सूनना भी राश्ट्र के लिये अहित कर है इसलिये वे अब सभा का बहिश्कार करते है। वे कई लोगो के समझाने के बाद भी नही माने । सभा उसके बाद भी चलती रही। विचारणीय है कि इतने अच्छे विद्वान भी संविधान को ही राश्ट्र और राश्ट्र को ही समाज मान ले और अपनी मान्यता को प्रमाणित करने के लिये तर्को के स्थान पर धौस का उपयोग करे तो ऐसे व्यक्ति को ना समझ या धूर्त न कहे तो और क्या कहे। आज भी समाज मे राजनेताओ के अनेक दलाल धूम धूमकर इसी तरह का प्रचार करते रहते है कि भारतीय संविधान दुनिया का सर्वश्रेश्ठ संविधान है या भारत दुनिया का सबसे बडा लोकतंत्र है आदि आदि। भारतीय संविधान ने राजनेताओ को पूरे समाज को लूट खाने के अनियंत्रित साधन उपलब्ध कर दिये है और राजनेताओ ने उन साधनो का कुछ भाग अपराधियो को सौप दिया हैं। ये राजनेता और अपराधी तत्व तो संविधान की बढ चढ कर प्रषंसा करेगे ही। किन्तु अन्य विद्वान नामधारी संविधान प्रषंसको को तो मेरे प्रष्नो का उत्तर देना चाहिये था। किन्तु वे लोग भी दुम दबाकर बैठ गये। लगता है कि या तो उनके पास कोई उत्तर का अभाव है या वे किसी राजनेता द्वारा किसी पहल की प्रतीक्षा कर रहे होगे। वस्तुस्थिति चाहे जो हो लेकिन इतना स्पश्ट है कि धीरे धीरे भारतीय जन मानस भारतीय संविधान मे व्यापक और कुछ मौलिक संषोधनो की आवष्यकता महसूस करने लगा है। अब धीरे धीरे राजनेताओ के दलाल संविधान समर्थको की भी आवाज कमजोर हो रही है। आवष्यकता है कि आप सब राश्ट्र भक्त लोग अपनी आवाज को और अधिक जोर से बुलन्द करे जिससे कि जनमानस को यह आवाज और जल्दी सुनाई देने लगे।

5. श्री रवीन्द्र सिह जी, सवतंत्र पत्रकार, गुना , मध्यप्रदेष

KAASHINDIA

ज्ञान तत्व एक सौ तिरसठ मिलां अहिसा की व्यापक चर्चा हुई है। मेरे विचार मे अहिसक षक्तियॉ जितना ही असमानताऍ कम करने का प्रयास करती है उससे कई गुना अधिक हिंसक षक्तिया स्थितियो को विगाड देती है। नेहरू जी ने कहा था कि भीड का अहिंसक होना कठिन है गांधी की हत्या के समय आपकी उम्र करीब पद्रह वर्श के आसपास होगी उस समय अनेक ऐसे प्रदेष थे जहा गांधी हत्या से खुषियॉ मनाई गई। वैसी ताकते राजनीति मे षामिल होकर मजबूत हो रही है। आप देख रहे होगे कि विष्व हिन्दु परिशद ने इस्लाम विरोध के नाम पर अपनी ताकत बहुत बढाई है। हिन्दुत्व का नाम लेना तो इनकी दुकानदारी का भाग है। वास्तव मे तो धुमा फिराकर ये लोग पूॅजी वाद के ही पोशण मे लगे हुए है।

उत्तर— केन्द्रीयकरण हमेषा ही धातक होता है। चाहे वह धन का केन्द्रीय करण हो अथवा सत्ता का । पष्चिम के देष धन को केन्दित करके उसके सहारे पर राजसत्ता को मजबूत करते रहते है। दूसरी ओर साम्यवादी देष राज्य सत्ता के सहारे सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था अपने हाथो मे समेटने की कोषिष करते रहते है। समाजवादी देष बीच का मार्ग अपना कर धन और सत्ता पर अधिकार करने की कोषिष करते है । प्रयत्न तीनो का एक ही है कि धन और राज्य सत्ता को अधिक से अधिक मात्रा मे अपने अधीन करके षेश समाज को गुलाम बनाकर रखा जाये। साम्यवादी पूॅजीवाद को गाली देते रहते है और पूॅजीवाद साम्यवाद को । उदेष्य दोनो का एक ही है।

आप जब भी लिखते है तो पूॅजीवाद के तो विरूद्ध लिखते है किन्तु सत्ता के केन्द्रीयकरण पर चुप हो जाते है। राज्य सत्ता के पास सब प्रकार के आर्थिक अधिकारो का भी सिमट जाना अधिक धातक होगा। इसलिये निजीकरण मे अनेक बुराइयॉ होते हुऐ भी राश्टीयकरण के नाम पर सत्ता केपास अर्थव्यवस्था का केन्द्रीयकरण अधिक धातक होगा चाहे वह पूॅजीवाद ही क्यो न हो। सबसे अच्छी व्यवस्था तो है लोक स्वराज्य जिसमे राज्य सत्ता और अर्थसत्ता विकेन्द्रित होकर प्रत्येक इकाइ के पास सीमित मात्रा मे रह जाती है । इस व्यवस्था की अपेक्षा पूॅजीवाद एक गुलाम बनाने वाली व्यवस्था है जिसमे धन सम्पति किसी भी मात्रा मे इस सीमा तक इकठी हो सकती है कि वह राज्य सत्ता तक को दबा दे और पूॅजीवाद की अपेक्षा समाजवाद या साम्यवाद को भी अपने नियंत्रण मे कर ले। मै आपसे चाहता हूॅ कि राश्टीयकरण और पूॅजीवाद के युद्ध के बीच आप किसी एक के पक्ष मे झुकने से बच सकें तो अच्छा होगा।

हिन्दुवादी ताकतें इस्लामिक ताकतों की अपेछा अधिक खतरनाक गति से बढ रही हैं यह तर्क पूरी तरह गलत है। साम्प्रदायिकता के मामले में इस्लामिक ताकतो को विष्व इस्लामिक कट्टरवाद का भी पूरा पूरा सहयोग मिलरहा है और कुछ वामपंथी गांधीवादी हिन्दुओं का भी जबकि साम्प्रदायिक हिन्दुवादी ताकतों को न विदेषी समर्थन प्राप्त है न पूरा का पूरा हिन्दु समाज ही उसके साथ है। इसलिये साम्प्रदायिकता के मामले में दोनो ही ताकतें खतरनाक गति से बढ रही हैं चाहे हिन्दू साम्प्रदायिक ताकतें हों या मुस्लिम साम्प्रदायिक ताकतें। दोनो को ही रोकने में ताकत लगाने की आवष्यकता है। इनमें से भी इस्लामिक साम्प्रदायिकता हिन्दू साम्प्रदायिकता की अपेक्षा अधिक खतरनाक है। दुर्भाग्य से आपके विचार एक पक्षीय दिखते हैं और वह पक्ष भी सिर्फ हिन्दू साम्प्रदायिकता के विरूद्ध। यह ठीक नहीं है।

6. डा. प्रभु. सत्यषीलम प्रेस, सागर, मध्यप्रदेष

25 दिसंबर जिसे बडा दिन माना जाता है , वास्तव मे बडा दिन है, जिस दिन ईसा मसीह का जन्म हुआ। उसी दिन लोक स्वराज्य मच के प्रेरणा एव व्यवस्था परिवर्तन अभियान के प्रवर्तक का भी जन्म हुआ अतएव ऐसे बडे दिन पर आपका भव्य अभिनंदन करते हुऐ जन्म दिवस की बधाई एव नये वर्श की हार्दिक षुभ कामनाऍ प्रेशित कर स्वयं को धन्य महसूस कर रहा हूॅ।

आपका भव्यातिभव्य अभिनंदन कि आपने विचार मंथन की मुहिम चलाकर जो विचार अमृत समाज के हित प्रकट किया है वह समाज मे नूतन प्राणधारा प्रवाहित कर रहा है ऐसा जागृत समाज ही बापू के सपनोके भारत का निर्माण करने मे सार्थक भूमिका निभा सकेगा

समस्त गांधीजनो की ओर से एवं एक ऐसे राजनीतिक दल की ओर से जो अंकुरित होकर पल्लवित होने का प्रयासकर रहा है, आपका हार्दिक अभिनंदन करना अपने लक्ष्य की ओर बढने वाले कदमो को उर्जा और उत्साह उपलब्ध कराने वाला है

मै, जो लगभग प्रांरभ से आपकी वैचारिक यात्रा मे ज्ञान तत्व के माध्यम से आपके साथ हूॅ आपके आंमत्रण पर आपके द्वारा समाज को आत्मसमर्पित करने के आपके मौलिक आयोजन मे सम्मिलित नही हो पाने पर आपकी धोशित टीम तथा आपके अगले महत्वपूर्ण योगदान के प्रति ईष्वर से प्रार्थना करता हूॅ।

7. श्री बाबू लाल षर्मा धीरज, संयोजक भारतीय मतदाता मंच , बांदा उ.प्र.

सितम्बर 20,21,22 को सेवागप्रम मे आयोजित सम्मेलन के मुदे पर विचार करने के लिए जिस तरीके से जो आंदोलन चलाने को चिन्तित है, उसके लिए षायद इस समय भेजे जा रहे अंको के कुछ विचार सहयोगी हो सके । हमारा आपका साध्य एव साधन एक जैसे है। दोनो अहिसक आन्दोलन कर रहे है। अन्तर इतना है कि अभी आप आन्दोलन के तरीको पर विचार कर रहे है। और हमने जनमानस को इतना आन्दोलित कर दिया है कि भारतीय मतदाता मंच की अवधारणा से जुडे आन्दोलन का धमाका करन को एक ऐसे मंच पर आमंत्रित किया है जो देष के राश्टपति, मुख्यमंत्री, वर्तमान एव निवर्तमान राज्यपालो के साथ मीडिया भी होगे।

वहा हम जो कहने जा रहे है उसकी एक प्रति आप को भी भेज रहे है। परिवर्तन के जिन अंको को पढकर प्रभावित होने पर आयोजको ने आमात्रित किया उन की कुछ की प्रतिया भी आपको भेज रहे है।

आप अधिकारो की सूची तैयार करने के प्रयास करे और हमारा प्रयास होगा कि जब तक आपकी सूची तैयार हो तब तक संविधान मे संषोधन लाने वाले सांसद ऐसे पहुचा दिये जाए जो उसी सूची के अधिकारो को संविधान मे स्थान देने को तत्पर हो जायं।

KAASHINDIA

आपके सेवाग्राम सम्मेलन की सफलताऔ के लिए षुमेच्छा के साथ।

उत्तर— मै पचपन वर्शो तक मानसिक व्यायाम करके इस निर्णय पर पहुचा कि संचालक और संचालित के बीच बडती दुरी ही समाज की सगसे प्रमुख समस्या है। इस दूरी को कम करने का प्रयास ही इसका समाधान है। यह दूरी दो दिषाओ से कम हो सकती है

1. संचालित मजबूत हो और 2. संचालन कमजोर हो। संचालित मजबूत हो इसके लिये मानसिक व्यायाम ही एक मात्र तरीका है । ज्ञान यज्ञ पहरवार इस मानसिक व्यायामक ा प्रचार प्रसार करेगा। संचालक कमजोर हो इसके लिये लोकतंत्र को लोक स्वराज्य की दिषा देनी होगी अर्थात लोक नियुक्त तंत्र को लोक नियंत्रित तंत्र मे बदलना होगा। यह बदलाव संविधान संषोधन से ही संभव है क्योकि संचालको के अधिकार बढाने या कम करने का अधिकार संविधान को ही है। संविधान संषोधन तीन तरीके से संभव है 1. वर्तमान राजनेताऔ पर दबाव बनाकर उन्हे संविधान संषोधन के लिये प्रेरित या मजबूर करना 2. नये नये लोगो को संसद मे भेजकर संविधान संषोधन कराना 3. जन षक्ति द्वारा विद्रोह करके संविधान बदल देना। भविश्य मे क्या होगा यह कहना कठिन है किन्तु इतना अवष्य है कि संविधान संषोधन का कोई और मार्ग नही है। हमलोगो की ठीम लोकस्वराज्य अभियान के नाम से यह काम कर रही है।

पच्चीस दिसम्बर को समाजार्पण के बाद मुझे क्या करना है यह नव निर्मित टश्ट तय करेगा। पच्चीस दिसम्बर को षम हुई टस्ट की बैठक ने तय किया कि अभी मै अपना कार्य पूर्ववत करता रहूॅ अर्थात दोनो दिषाओ मे कार्य करने वाले साथियो को मार्ग दर्षन देता रहूॅ। अभी मेरी इतनी ही भूमिका है। चूॅकि आप बहुत आगे बढकर काम कर रहे है इसलिये मै तो आपकी सफलता के लिये ईष्वर से प्रार्थना ही कर सकता हूॅ। ईष्वर आपको निरंतर संचालेक और संचालित के बीच दूरी कम करने मे सकिय रखे यही कामना है।

उत्तर आपने कई वर्श पूर्व ही जन प्रतिनिधियो द्वारा मनमानी वेतन वृद्धि के अधिकार का विरोध षुरू किया। अब लोक स्वराज्य अभियान भी इतने वर्श बाद उसी नतीजे पर पहुचा है। हमे खुषी है कि आप इस आंदोलन को पूर्व से ही चला रहे है। अभियान से जुडे लोग आपका साथ देगे।,

आपने सांसदो की विकास निधि समाप्त करने की भी माग उठाई है। हम सब लोग इस माग से सहमत है। किन्तु हम अपने आंदोलन मे सिर्फ एक ही मांग लेकर इसलिये चल रहे है कि अधिक मांग रखने की अपेक्षा प्रारंभ छोटी मांग से ही करना ठीक रहेगा। वैसे सहमति तो सबसे है ही।

8. श्री कृश्ण कु मार सोमानी, बम्बई

ज्ञान तत्व एक सौ उनसठ मे आपने चुनाव सुधार या भश्टाचार नियंत्रण जैसे मुदो को छोडकर सिर्फ विकेन्द्रीयकरण को ही मुख्य माना है। इतिहास देखे तो स्वतंत्रता पूर्व भी यही भूल हुई थी जब हमारे नेताओ ने बाद मे सोच लेगे कहकर भविश्य की योजना को टाल दिया था। परिणाम हमारे सामने है।

अंग्रजो ने हमे स्वतत्रता के पूर्व की चुनाव पद्धति ही हम पर थोप दी। इस पद्धति से संसद और विधान सभाओ मे भश्टाचार बढा। अब वही चुनाव प्रणाली पंचायतो को भी भश्ट करेगी।

उत्तर— आपके चिन्तन और मेरे चिन्तन मे बुनियादी फर्क है। आप मानते है कि यदि ठीक लोग चुनकर जायेगे तो सब ठीक हो जायेगा क्योकि दोश व्यक्तियो का है पद्धति का नही। मेरा सोच इससे उल्टा है कि दोश पद्धति का है व्यक्तियो का नही। आप चुनाव प्रणाली को दोशी मान रहे है और मै समूची लोकतांत्रिक प्रणाली को ही दोशी मान रहा हूॅ जिसका एक छोटा सा भाग चुनाव प्रणाली है। मेरे विचार मे लोकतांत्रिक प्रणाली को लोक स्वराज्य प्रणाली मे बदल दे तो चुनाव प्रणाली का महत्व अपने आप कम हो जायेगा। जो बच जायेगा उसे हम ठीक कर लेगे। आप लोकतंत्र को लोक स्वराज्य मे बदलने को सर्वोच्च प्राथमिकता न देकर अन्य कार्योको प्राथमिकता देना चाहते है।

आप एक भूल और कर रहे है कि संधर्श और विचार मंथन को अलग अलग नही कर रहे। स्वतंत्रता के पूर्व भी दो पक्ष थे 1 विदेषी सत्ता 2. स्वदेषी संधर्श। संधर्श मे जीतने के बाद हम कैसी व्यवस्था करेगे इस पर हम निरंतर विचार करते रहे किन्तु इस विचार विमर्श मे विदेषी सत्ता की कही कोई भूमिका नही थी। वे षासक के रूप मे विचार मंथन मे कोई पक्ष नही हो सकते क्योकि संधर्श काल मे यह हमारा आंतरिक मामला बन जाताहै। इस समय भी दो पक्ष बन गये है। 1हमारा षासक लोकतंत्र और 2हमारा लोक स्वराज्य संधर्श। हमारी लोक स्वराज्य व्यवस्था कैसी होगी यह हमारा आंतरिक मामला है। इस पर बहुत व्यापक विचार मंथन के बाद एक लोक स्वराज्य संविधान बनकर तैयार भी हो चुका है उस प्रारूप पर आगे भीगभीर चर्चा चलती ही रहती है। ज्ञान तत्व का पूर्वाध इसी काम मे लगाहुआ है। मै भी इस कार्य को प्राथमिकता के आधार पर देखता हूॅ। किन्तु जिन लोगो का जुडाव सत्ता से है और जिनसे हमारा सीधा संधर्श होना है वे हमे संधर्श से भटकाकर उलझााना चाहे तो हम ऐसे धोखे से बचने का प्रयास करेगे। आंदोलन और अभियान से जुडे या सहमत लोगो से खाली समय का विचार मंथन चलता है और आंदोलन के विरूद्ध लोगो को फटकार भी दी जाती है।

आंदोलन से दूर या विरूद्ध रहने वाले भी कुछ मानसिक व्यायाम के उदेष्य से ज्ञान यज्ञ परिवार से जुडे हो तो स्वतंत्र विचार मंथन भी संभव है। इसका आंदोलन से कोई संबंध नही होगा। यदि कोई सीधा टस्ट से ही जुडना चाहे तो वह एक हजार रूपया मासिक या दस हजार रूपया वार्शिक देकर टस्ट मे हो सकता है। मुझे प्रत्यक्ष सम्पर्क के अभाव मे वास्तविक स्थिति की जानकारी नही। यदि आप लोक स्वराज्य अभियान से पृथक चुनाव सुधार संबंधी कोई आंदोलन का प्रयास कर रहे है तो मुझसे चर्चा करने मे आपका समय नुकसान होगा। यदि आप भविश्य के लिये विचार मंथन मे षामिल है कि लोकस्वराज्य के बाद व्यवस्था कैसी होनी चाहिये तो मै निरंतर आपके साथ हूॅ । यदि आप सामाजिक विशयो पर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे स्वतंत्र विचार मंथन की दिषा मे बढना चाहे तब तक भी मै आपका सहयोगी हूॅ किन्तु आप वर्तमान राजनेताओ को सुधारकर उनकी गुलामी को स्वीकार करने मे लगना चाहे तो मेरी राह अलग है। मै तो अन्तिम रूप

KAASH INDIA

से मान चुका हूँ कि वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था राजनेताओ , अपराधियो, पूँजीपतियो ,बुद्धिजीवियो के पक्ष मे है जिसका सुधरना असम्भव है। इसलिये सम्पूर्ण राजनैतिक व्यवस्था को लोक स्वराज्य की दिषा मे ले जाना ही एकमात्र मार्ग है। वैसे आपकी जैसी मर्जी।

KAASH INDIA